The Journal of Sri Krishna Research & Educational Consortium
INTERNATIONAL JOURNAL OF BUSINESS ECONOMICS AND MANAGEMENT RESEARCH
Internationally Indexed & Listed Referred e-Journal

पर्यटन उद्योग एवं अर्थव्यवस्था

ऋचा चौहान

पर्यटन बिना चिमनी और धुएँ का उद्योग है। राजस्थान की अर्थव्यवस्था में पर्यटन का महत्वपूर्ण स्थान है। इसे इस बात से समझा जा सकता है कि गत वर्षों में यहाँ पर आने वाले पर्यटकों की संख्या में उत्तरोत्तर वृद्धि हुई है। यहां तक कि जब पूरे देश में पर्यटन के विपरीत स्थितियां थी तो भी राजस्थान आने वाले पर्यटकों की संख्या में वृद्धि हुई है। इसका कारण यहां का शांत वातावरण और पर्यटन स्थलों का सहज आकर्षण ही है। अव्यवस्था में पर्यटन का सीधा असर पड़ता है क्योंकि इसी से विदेशी मुद्रा की प्राप्ति होती है। वर्तमान संदर्भो में पर्यटन से अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ किया जा सकता है।

पर्यटन आर्थिक क्रिया के रूप में :-

अन्य आर्थिक क्रियाओं की तरह पर्यटन भी एक आर्थिक क्रिया है। हालांकि पर्यटन स्वयं में संगठित उद्योग है परन्तु इसकी सीमाएं बहुत विशाल है। ये सीमाएं विभिन्न स्थानों पर बिखरी हुई है तथा इसके लाभ राष्ट्र की समस्त जनता को उपलब्ध होते हैं। वे सभी व्यक्ति, जो पर्यटन-स्थानों में निवास करते हैं, पर्यटन-क्रिया में सक्रिय होते हैं। समस्त पर्यटन, चाहे वह स्वदेशी हो या विदेशी, क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था के लिए रोजगार प्रदान करने में सहायक होते हैं तथा साथ ही अच्छी संस्कृति को कायम करने का अवसर प्रदान करते हैं। प्रत्येक नागरिक को अपने शहर, संस्कृति, रीतिरिवाज व इतिहास पर गर्व होता है।

पीटर एफ डूकर के अनुसार पर्यटन के आर्थिक रूप से पांच मुख्य कार्य होते हैं। ये पांच कार्य इस प्रकार से हैं-

(1) दुर्लभ मुद्रा अर्जित करके व्यापार-संतुलन में योगदान करना।

(2) जिन क्षेत्रों में औद्योगिक विकास नहीं है वहां पर विकास को बढ़ावा देना।

(3) रोजगार के अवसरों में वृद्धि करना।

(4) बहुप्रभाव के माध्यम से सामान्य आर्थिक क्रियाओं में सहयोग करना।

(5) विश्व के कार्यों में लोगों का उत्साह बढाकर सामाजिक लाभ प्रदान करना तथा विदेशी व्यक्तियों व विदेशी वस्तुओं का ज्ञान प्राप्त करना ।

पर्यटन के अंतर्गत आर्थिक स्त्रोतों का विकास होता है। अतएव लाभ-प्राप्ति का प्रश्न बहुत ही महत्त्वपूर्ण है। ये लाभ-प्राप्ति किसी भी उपक्रम के उद्धेश्यों के रूप में प्राप्त किये जा सकते हैं। लाभ-प्राप्ति चाहे वह नकारात्मक हो या सकारात्मक तथा जिनका उद्देश्यों से कोई सम्बन्ध न होने पर भी कुछ मिले-जुले कारणों से वह महसूस हो सकती हैं।)

विकसित अर्थव्यवस्था में विकास कार्यों के लिए विदेशी मुद्रा की अति आवश्यकता होती है, परन्तु पर्यटन के आर्थिक लाभों का सही ज्ञान तभी हो सकता है जबकि इसके उत्पादन, रोजगार व कर-आय पर पड़े प्रभावों का अध्ययन किया जाए। आज यह विश्व

का उद्योग है, जिसमें बहुत ही अधिक निवेश निहित है। आवास, परिवहन, पर्यटन-स्थल तथा सहायक सुविधाएं, जोकि पर्यटन के मुख्य पहलू हैं, पर किये गये नियोजन से पर्यटन-चित्र राष्ट्रों में बहुत हो उच्च आय प्राप्त होती है।

रोवर्ट इरवेज ने विकासशील अर्थव्यवस्था में पर्यटन के योगदान के संदर्भ में बताया कि उत्पादन के साधनों का पर्यटन में उपयोग करने से कितनी अधिक आय प्राप्त होती है यह तभी मालूम हो सकता है जबकि पर्यटन व अन्य वैकल्पिक क्षेत्रों में उत्पादन के कार्य का सही अनुमान लगाया जाए। इस संबंध में पर्यटन को अर्थव्यवस्था की कसौटी पर कसने के लिए जो फार्मूला काम में लिया जाए उसका भी अध्ययन आवश्यक है।

वास्तव में तो पर्यटन एक उद्योग है तथा यह अर्थशास्त्र के सिद्धान्तों द्वारा ही प्रभावित होता है। गत 40 वर्षों में पर्यटन से संबंधित अर्थशास्त्रियों ने एक सिद्धान्त की खोज की है जिसे पर्यटन के गुणक प्रभाव के नाम से पुकारा जा सकता है। 1959 में अर्थशास्त्र विभाग, मोसेचेसेट्स ऑफ टेक्नोलोजी के अध्यक्ष प्रोफेसर पाल ए साइमुलशन ने एक गुणित सिद्धान्त की खोज की थी। इस सिद्धान्त का सूत्र इस प्रकार है-

k = 1/c

1-/y

इस सिद्धान्त के अनुसार 'के' गुणित 'सी' और 'वाई' पर आश्रित है जोकि क्रमशः उपभोक्त व आय के पर्यटन के सम्बन्ध के द्योतक है, इस प्रकार-

k = गुणक

c = उपभोग में परिवर्तन

y = आय में परिवर्तन

यह सिद्धान्त पर्यटन पर भी लागू होता है। पर्यटकों द्वारा किया गया व्यय, व्यय करने के पश्चात रुकता नहीं है। यह राष्ट्र की अर्थव्यवस्था में तब तक विचलन भ्रमण करता रहता है जब तक पर्यटक किसी स्थान की यात्रा करता रहता है व उस क्षेत्र में धन व्यय करता है यही धन स्थानीय लोगों की आय का साधन बन जाता है। इस आय का कुछ भाग खर्च किया जाता है जो अन्य लोगों की आय का साधन बन जाता है। फिर से यह आय खर्च की जाती है और यह सिलसिला चलता रहता है, इस प्रकार यह धन कई हाथों से होकर गुजरता रहता है। राष्ट्रीय मुद्रा, जो कि विदेशी मुद्रा के लिये विनिमय की जाती है, देश के अन्दर प्रवेश करके सारे मार्केट में फैल जाती है। इस प्रकार गुणित का तेज प्रभाव पर्यटन व आय के अनुपात पर निर्भर करता है जो कि समस्त राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था की विभिन्न शाखाओं में पुनः वितरित होती रहती है।पर्यटन अप्रत्यक्ष निर्यात के माध्यम से विदेशी मुद्रा कमाने का देश का सबसे बड़ा उद्योग है। पर्यटन किसी भी दूसरे क्षेत्र की तुलना में निवेश किये गये प्रत्येक रुपये के कारण और अधिक नौकरियां उत्पन्न करता है। यह स्थानीय स्तर पर भी नौकरियां उत्पन्न करता है और जीवकोपार्जन के लिए दूर-दराज के स्थानों तक अप्रवास की आवश्यकता के अनुसार फैला हुआ भी है। वास्तव में पर्यटन बड़े स्तर पर रोजगार के अवसरों को बढाने में एक प्रमुख भूमिका अदा करता है। इन सब बातों को ध्यान में रखते हुए ही भारत सरकार ने सर्वप्रथम पर्यटन उद्योग को 'निर्यातगृह' दर्जा दिया है।

निजी क्षेत्र में पर्यटक सुविधाओं की लगातार वृद्धि उपार्जित करने और उनकी सेवाओं की गुणवत्ता को उच्च स्तर पर सुनिश्चित करना ही आज सरकार का लक्ष्य है। इसलिए ही आज पर्यटन को दरअसल उद्योग का दर्जा दिया गया है और केन्द्रीय तथा राज्य सरकार दोनों के ही द्वारा इस क्षेत्र में कई प्रोत्साहन उपलब्ध कराये गये हैं।इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि आदि सम्मिलित हैं,

ये सभी क्रियाएं पर्यटन में होती हैं तथा राज्य में इस दिशा में पर्यटन उद्योगअर्थव्यवस्था में पर्यटन का महती स्थान है।अर्थव्यवस्था के सभी महती घटक, जिनमें रोजगार-जनन, आर्थिक लाभ, जीवन-स्तर में सुधारका महत्व स्थान रहा है। इसे देखते हुए इस बात से तो इनकार किया ही नहीं जा सकता कि अर्थव्यवस्था में पर्यटन अपना अहम स्थान रखता है।

निरंतर बढ़ती पर्यटकों की संख्या-

अर्थव्यवस्था में पर्यटन के महत्व को इस रूप में भी समझा जा सकता है कि इस उद्योगके अंतर्गत कुछ का नाम अंतरराष्ट्रीय ख्याति को प्राप्त कर चुका है। इनमें से कुछ जैसे पैलेसऑन व्हील्स, हेरिटेज होटल, कैमल सफारी, पुष्कर मेला एवं मरुमेली, वन्य जीव अभयारण्य,राष्ट्रीय पार्क आदि पर्यटकों में अत्यधिक लोकप्रिय हो चुके हैं। पर्यटन के अर्थव्यवस्था में बढ़तेमहत्व को देखते हुए राजस्थान सरकार ने इसे विशेष दर्जा प्रदान कर यहां पर्यटन-विकास एवंवृद्धि को विनियमित करने के लिए हाल ही में एक पर्यटन विकास नीति की भी घोषणा की है।निरंतर प्रदेश में बढ़ते पर्यटकों की संख्या से भी पर्यटन के अर्थव्यवस्था में योगदान को समझाजा सकता है

राजस्थान की अर्थव्यवस्था में पर्यटन उद्योग की महती भूमिका को निम्न आधारों पर भी समझा जा सकता है:-

विदेशी मुद्रा का अर्जन :- आज विश्व में पर्यटन को एक महत्वपूर्ण उद्योग माना जाने लगा है। भारत को पर्यटन से कई अरब रुपयों की विदेशी मुद्रा प्राप्त होती है, इसमें राजस्थान का काफी योगदान होता है। भारत भ्रमण के लिए आने वाले तीन विदेशी पर्यटकों में से एक राजस्थान अवश्य आता है।

रोजगार का साधन :- पर्यटन उद्योग के सहायक उद्योगों से राज्य में रोजगार-जनन में काफी मदद मिली है। पर्यटन एक प्रदूषणरहित उद्योग है और इसमें किए गए विनियोग की तुलना में यह रोजगार के काफी साधन उपलब्ध कराता है। प्रत्येक आठ विदेशी पर्यटकों पर राज्य में एक व्यक्ति को रोजगार मिलता है।

राष्ट्रीय आय :- घरेलू और विदेशी दोनों ही पर्यटन राष्ट्रीय आय का समर्थन करते हैं। पर्यटन से होने वाली आय से विनियोजन को बढ़ावा मिलता है और अधिक बिक्रियों विनियोजन राष्ट्रीय आय वृद्धि का बड़ा कारण बनता है। जैसे पर्यटकों द्वारा आवास, परिवहन, मनोरंजन के लिए किया जाने वाला खर्च, उपभोक्ता वस्तुओं पर किया गया व्यय तथा स्थान-विशेष पर भ्रमण के अंतर्गत किया जाने वाला व्यय आदि।

अंतर्राष्ट्रीय व्यापार:- अंतरराष्ट्रीय व्यापार की दृष्टि से पर्यटन का विशेष महत्व है। पर्यटन के अंतर्गत विश्व स्तर पर यात्रा और भ्रमण के तहत सेवाओं का भी विपणन किया जाता है जैसे बैंकिंग, बीमा, परिवहन, सेवाएँ। जितना अधिक अंतर्राष्ट्रीय व्यापार का आकार होगा, उतना ही अधिक पर्यटन का आकार होगा। भारत सरकार ने पर्यटन को "नियति गृह" का दर्जा प्रदान किया है।

विभिन्न उद्योगों को प्रोत्साहन : पर्यटन स्वयं तो एक उद्योग है ही, वह अपने से संबंधित विभिन्न अन्य उद्योगों को भी प्रोत्साहन देता है। बहुत से उद्योग तो वस्तुतः पर्यटन पर ही आश्रित होते हैं, यथा- होटल, रेस्टोरेंट, यात्रा अभिकर्ता, यात्रा प्रचालक, परिवहन। इन सब उद्योगों के साथ आंशिक रूप से आश्रित भी बहुत सी पर्यटन सेवाएँ हैं, यथा बैंकिंग, बीमा, लॉन्ड्री, कृषि, हस्तशिल्प, डेयरी, मुर्गीपालन, आंतरिक सज्जा, आदि उद्योग भी पर्यटन से जुड़े उद्योग हैं।

उद्योग विहीन क्षेत्रों का विकास : जहाँ उद्योग धंधों का बाहुल्य होता है, वहीं विकास स्वतः ही होता है। औद्योगिक विकास वाले क्षेत्रों में तो धन का केंद्रीकरण हो जाता है, परन्तु पर्यटन क्षेत्र आय के वितरण के माध्यम से इस प्रभाव को अन्य क्षेत्रों में अग्रेषित करता है। पर्यटन सामान्यतः पर्वतीय, ग्रामीण, समुद्रतटीय, वनों में ही होता है। ऐसे स्थानों पर आय का जरिया पर्यटक ही होते हैं।

इन इलाकों का सम्पूर्ण विकास पर्यटन गतिविधियों पर ही केंद्रित होता है। कुल मिलाकर पर्यटन का आर्थिक प्रभाव समग्र अर्थव्यवस्था पर पड़ता है।

संदर्भ सूची :

राजस्थान सुजस : 1993

पर्यटन एवं यात्रा के सिद्धांत - डॉ. जगमोहन, नेगी

प्रगति प्रतिवेदन 2005 पर्यटन कला एवं संस्कृति विभाग, राजस्थान सरकार

Economic Review